शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

# कोविड–19, के दौर में 'ई–प्रशासन' की भूमिका

प्राप्तिः 09.12.2022
स्वीकृतः 26.12.2022

97

**राम कुमार**
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
महाराज सिंह कॉलेज, सहारनपुर
ईमेलः

***सारांश***

*कोविड–19 लॉकडाउन के बाद, भारत सहित कई देशों ने लॉकडाउन प्रक्रियाओं को अपनाया, लॉकडाउन के दौरान लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। मानव गतिविधियों को बड़े पैमाने पर रोक दिया गया था। भारत के संदर्भ में लॉकडाउन 25 मार्च, 2020 से शुरू होकर 31 मई, 2020 तक रहा। वैश्विक महामारी का हमारे चारों ओर के वातावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कोविड–19, महामारी को कोरोना वायरस महामारी के नाम से भी जाना जाता हैं। कोरोना वायरस को सर्वप्रथम दिसम्बर 2019 में चीन के बुहान शहर में पहचाना गया। जनवरी 2020 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक चिकित्सा आपातकाल घोषित किया। मार्च 2020 में इसे महामारी घोषित कर दिया गया। आज सम्पूर्ण विश्व में 74.2 करोड केस पहचाने गये हैं। वहीं 1.64 करोड़ लोगों को मौत का सामना करना पड़ा।*

***मुख्य बिन्दु***

*'ई–प्रशासन', कोविड– 19, महामारी, लॉकडाउन पुनर्जीवन, तकनीक।*

**प्रस्तावना**

कोविड– 19 का प्रकोप एक प्रमुख वैश्विक स्वास्थ्य चिंता का विषय बन गया और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व स्तर पर 545,226,550 संक्रमित मामलों और इस वैश्विक महामारी से 6,334,728 लोगों की मौत की जानकारी उपलब्ध करायी है (WHO, 2022)। कोविड–19 विषाणु से होने वाला रोग एक संक्रामक बीमारी है जो सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम कोरोना वायरस –2 (सार्स कोरोना वायरस वायरस–2) के कारण होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस से होने वाली इस बीमारी को 31 जनवरी, 2020 को सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के रूप में सूचीबद्ध किया और इसे 11 मार्च, 2020 को एक महामारी घोषित कर दिया (Cucinotta & Vanelli, 2022)। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड–19 को एक महामारी घोषित कर दिया हैं। आज कोविड–19 का प्रसार सम्पूर्ण विश्व में बहुत तेजी से हो रहा हैं। जो कि मानव प्रजाति और समाज के उपर एक बहुत बड़ा खतरा हैं। क्योंकि कोविड– 19 ने न सिर्फमानवीय स्वास्थ्य को प्रभावित किया हैं बल्कि समाज एवं संस्कृति को भी प्रभावित किया हैं। समाज का ऐसा कोई पक्ष नहीं हैं जिसे कोविड– 19 महामारी ने प्रभावित न किया हो। इस महामारी ने मानवीय अन्तः क्रिया एवं मानवीय सम्बन्ध से लेकर

सामाजिक क्रियाएं, आर्थिक क्रियाएं, राजनैतिक क्रियाएं, धार्मिक क्रियाएं जननांककीय गतिविधियों आदि कोट यापक रूप से प्रभावित किया हैं। अर्थात समाज का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं हैं जिसे कोविड– 19 ने प्रभावित न किया हो। आज सम्पूर्ण समाज कोविड– 19 के प्रभाव से अस्त–व्यस्त एवं अव्यवस्थित सा महसूस होने लगा हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति कोरोना महामारी के पहले से ही बिगडी थी। वहीं कोरोना महामारी को रोकने के लिये भारत तथा विश्व के अधिकतर देशो में पूर्ण लॉकडाउन की नीति अपनाई गई हैं। जिससे न सिर्फ भारत को बल्कि विश्व के हर देष को इसकी आर्थिक एवं सामाजिक कीमत चुकानी पडी। कोविड–19 का प्रथम और गहरा प्रभाव उन परिवारो पर पडा जिनके सदस्य इस बीमारी से चल बसे और यदि वे परिवार के मुखिया थे तो एसे मे परिवार को संभालने की जिम्मेदारी बच्चों पर आ पड़ी जिससे न सिर्फ परिवार के जीवनयापन में समस्या आयी बल्कि बच्चों का भविष्य भी अनिश्चित हो गया। वहीं सर्वाधिक प्रभाव उन परिवारों पर देखने को मिला जो आर्थिक तौर पर बेहद पिछडे हैं। जैसे घुमन्तू समुदाय के लोग, दिहाडी मजदूर, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले कामगार आदि। इन समुदायों पर कोरोना महामारी का दोहरा प्रभाव पड़ा हैं। प्रथम तो रोजगार छूट जाने की स्थिति मे आय शून्य हो जाना वहीं दूसरी और बचत न होने की स्थिति मे परिवार को भरण–पोषण के दबाव से गुजरना पडा तथा परिवारिक कलह जैसी समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं। कोविड– 19 महामारी का एक गम्भीर प्रभाव महिलाओं पर भी पडा हैं। पितृसत्तात्मक समाज में परिवार की सुबह से रात तक की जरूरतों को पूरा करने की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं की होती हैं। लॉकडाउन की स्थिति में बच्चे, वयस्क, बुजुर्ग सभी अपने–अपने घर पर ही रहे हैं तो न चाहते हुये भी महिलाओं के घरेलू कार्यों में अनावस्यक रूप से वृद्धि हुई हैं। जिसका प्रभाव महिलाओं की सेहत और मानसिक स्थिति पर पड़ा हैं। फलस्वरूप परिवारिक क्लेश एवं घरेलू झगडों में भी वृद्धि हुई हैं।

कोविड–19 महामारी के प्रभाव से शिक्षा का क्षेत्र भी बुरी तरह प्रभावित हुआ हैं। प्रथमिक हो, माध्यमिक या उच्च शिक्षा छात्रो का पठन–पाठन बुरी तरह से प्रभावित हुआ हैं। बच्चों के लिये काम करने वाली संस्था 'सेव द चिल्ड्रन' ने इस सम्बन्ध मे एक रिर्पोट तैयार की हैं। इस रिर्पोट मे संयुक्तराष्ट्र का हवाला देते हुये लिखा गया हैं कि अप्रैल 2020 मे दुनियाभर मे 1.6 अरब बच्चे स्कूल और यूनीवर्सिटी नहीं जा सके यह दुनिया के कुल छात्रों का 90 फीसदी हिस्सा हैं। रिपोर्ट में लिखा गया कि मानव इतिहास में पहली बार वैश्विक स्तर पर बच्चों की एक पूरी पीढी की शिक्षा बाधित हुई हैं। एक ओर छात्रों की शिक्षा तो बाधित हुई ही हैं तो दूसरी ओर महत्वपूर्ण विषय है कि जो छात्र पहले खुलकर रहत थे विभिन्न गतिविधियों जैसे खेल आदि मनोरंजन में अपने सहपाठियों के साथ खुलकर भाग लेते थे आज वो छात्र अपने घर मे कैद हैं। वहीं टी.वी., लैपटॉप, मोबाईल का अधिक उपयोग भी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डाल रहा हैं। कोविड– 19 महामारी का सभी पर गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पडा हैं, उन पर जो वायरस से प्रभावित नहीं हैं। इन बीमारियों को लेकर हमारी प्रतिक्रिया मेडिकल ज्ञान पर आधारित न होकर हमारी सामाजिक समझ से भी संचालित होती हैं। किसी वैश्विक बीमारी का प्रभाव सामाजिक ताने–बाने पर भी पड़ता हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के पहले महानिदेशक ब्रॉकचिश होम का कथन है कि बगैर मानसिक स्वास्थ्य के सच्चा शारीरिक स्वास्थ्य नहीं हो सकता। कोविड–19 महामारी ने आम लोगों मे चिन्ता और घबराहट को बढ़ें पैमाने पर बढ़ाया हैं। लोग भय से ग्रस्त हो गये हैं। फलस्वरूप ब्लडप्रेशर, हृदयरोग जैसी गम्भीर बीमारियों में वृद्धि हुई हैं तथा जो लोग पहले से ब्लडप्रेशर या हृदयरोग से ग्रसित थे उन्हें चिन्ता और भय ने और गम्भीर बना दिया हैं।

कोविड– 19 महामारी ने न सिर्फ भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व मे बेरोजगारी की दर मे बेतहाश वृद्धि की हैं। कोरोना के चलते बडे पैमाने पर रोजगार गये और नये रोजगारों को लेकर भी अनिष्चतता बनी हुई हैं। मुंबई स्थित थिंकटैंक ने हालिया रिपोर्ट के आधार पर बताया कि मार्च 2016 मे भारत मे बेरोजगारी की दर 8.7 फीसदी थी। सितम्बर 2016 में सर्वाधिक थी। यह दर जनवरी 2020 में 7.16 फीसदी के स्तर से तेजी से उपर बढ़ गयी हैं। सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इकोनॉमी के आंकड़ों के अनुसार 29 मार्च 2020 को समाप्त सप्ताह मे भारत मे बेरोजगारी दर मे और इजाफा हुआ। डेटा बताते है कि भारत मे कोरोना वायरस का पहला मामला सामने आने के बाद जनवरी से भारत में बेरोजगारी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही हैं।

इस प्रकार देखते हैं कि कोविड–19 महामारी ने समाज के प्रत्येक पक्ष को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, महिला, रोजगार, शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, सुरक्षा आदि को बुरी तरह से प्रभावित किया हैं।

**'ई– प्रशासन' की भूमिका**

'ई–प्रशासन' एक ऐसा प्रशासन हैं जिसमें ईलवेटॉनिक संसाधनों का प्रयोग करके प्रशासन को संचालित किया जाता हैं। अर्थात सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी का उपयोग करके प्रशासन को संचालित करना ही 'ई–प्रशासन' हैं। कोविड–19 महामारी के दौर मे जहां लोग घर में कैद हैं, लॉकडाउन की वजह से घर से नहीं निकल पा रहें हैं, वहीं कोरोना संक्रमण मे भय से सामाजिक दूरी का कडाई से पालन कर रहे हैं। ऐसे मे आमजनमानस को रोजमर्रा की आवश्यक्ताओं की पूर्ती के लिये गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। ऐसे मे 'ई–प्रशासन' ही एक एसा माध्यम है, जो लोगो की समस्याओं का समाधान कर रहा हैं। आमजन–मानस को उनके घर बैठे ही ऑनलाइन माध्यम से उनकी आवश्यक्ताओं की पूर्ती करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हैं। कोविड–19 का इलाज ढूंढने के प्रयास सारी दुनिया मे युद्ध स्तर पर जारी हैं, परन्तु तब तक इसके प्रसार को कैसे रोका जाय, तमाम देश इस पर पूरी ताकत झोकें हुये हैं। इस भागीरथ प्रयास मे तकनीक एवं 'ई–प्रशासन' बडी भूमिका निभा रहा हैं। हाल ही में भारत सरकार ने एन्ड्रॉयड आईओएस उपयोगकर्ताओं के लिये कोविड–19 टैकिंग एपष आरोग्य सेतु लॉन्च किया हैं, इस एप का उद्देश्य नागरिकों को कोविड–19 से कैसे बचाया जाए क्या सावधानियां बरती जाए और इस पर चल रहे शोध सम्बन्धित जानकारी जनता तक पहुचाना है। पर ये एप जो सबसे बड़ा काम कर रहा हैं वो उपयोगकर्ताओं को पहचानने में मदद है कि उन्हें कोरोना वायरस से संक्रमित होने का जोखिम है या नहीं, ये एप ये भी बताता है कि कहीं आप जानबूझकर या अनजाने मे ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क मे तो नहीं आए हैं जोक विड– 19 पॉजटिव पाए गए हैं। यह एप राष्ट्रीय सूचनाविज्ञान केन्द्र द्वारा विकसित किया गया हैं, जो संक्रमित लोगों का सरकारी डेटाबेस का उपयोग करता हैं। इसके साथ ही आम जनता तक पहुचन के लिये सरकार ने व्हाटसअप हेल्पडेस्क नम्बर भी लॉन्च किया गया हैं। केरल जैसे राज्य सी.सी.टी. वी का इस्तेमाल भी कर रहे हैं। सिर्फ भारत में ही नहीं तमाम देश हैं, जो तकनीक का उपयोग कर अपनी जनता को सुरक्षित कर रहे हैं।

वर्तमान मे 'ई–प्रशासन' से सम्बन्धित टेली मेडीसिन जिसे ईस्वास्थ्य सुविधा का एक बेहतरीन उदाहरण माना जाता हैं, की आवश्यक्ता को महसूस किया जा रहा हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय जनसंख्या के लिये बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं मे वृद्धि कर रहा हैं। इससे मुख्यतः ग्रामीण आबादी अत्याधिक लाभान्वित हो रही हैं। टेलीमेडिसिन सभी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता हैं।

लेकिन कई समस्याओं से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। टेली–हेल्थ, टेली–एजूकेशन, टेली–होम हेल्थकेयर जैसी सेवाएं स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र मे चमत्कारिक साबित हो रहीं हैं। आपदा प्रबंधन के क्षेत्र मे टेलीमेडीसिन का विशेष महत्व है। जैसा कि वर्तमान में कोरोना वायरस के दौर मे देखा जा रहा हैं। टेलीमेडिसिन की पहल अर्न्तराष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवाओं को करीब ला रही हैं। और गुणवत्ता स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने मे रूकावटों को दूर कर रहीं हैं। कोविड–19 महामारी के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिये लागू किये गए लॉकडाउन के कारण स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो रही हैं। परिणाम स्वरूप शिक्षा अब तेजी से ई–शिक्षा' की ओर अग्रसर हो रही हैं। कोरोना वायरस के दौरान शिक्षा के क्षेत्र मे 'ई–प्रशासन' ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। 'ई–शिक्षा' के माध्यम से आम जनमानस को शिक्षा से जोड़कर रखा गया हैं। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय स्तर पर ऑनलाईन शिक्षा को संचालित करके इस महामारी के संकट का प्रत्युत्तर दिया गया हैं। ई–शिक्षा के अर्न्तगत सरकार को स्तर से' स्वयं' (SWAYAM) स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंडस एक एकीकृत मंच है जो स्कूल 9वीं 12वीं से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता हैं। वहीं (SWAYM Prabha) 24X7 आधार पर सभी जगह डायरेक्टर टू होम (DTH) के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चौनल प्रदान कर रहा हैं। भारत की राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी एक एकल खिडकी खोज सुविधा के तहत सीखने के संसाधनों के आभासी भंडार का एक ढांचा विकसित कर रहा हैं। वहीं 'स्पोकन ट्यूटोरियल छात्रों की रोजगार क्षमता को बेहतर बनाने के लिये अपने सोर्स सॉफ्टवेयर पर दस मिनट के ऑडियो–विडियो ट्यूटोरियल उपलब्ध हैं। यह स भी 22 भाषाओं में उपलब्ध है। शिक्षा के लिये निःशुल्क और ओपनसोर्स सॉफ्टवेयर शिक्षण संस्थानों में शिक्षण कार्य कर रहा हैं। तथा वर्चुअल लैब को उपलब्ध करा रहा हैं।' ई–यन्त्र इंजीनियरिंग कॉलेजो मे एम्बेडेड सिस्टम और रोबोटिक्स पर प्रभावी शिक्षा को सक्षम बनाता हैं। इस प्रकार 'ई–प्रशासन' के माध्यम से लॉकडाउन के नियमों का पालन करते हुये शिक्षा प्राप्त की जा रही हैं। इस वैश्विक संकट मे ई–प्रशासन लाखों नागरिको के लिये एक शक्तिशाली उपकरण के रूप मेउ भरा है। डिजिटल माध्यम से सहायता का यह रूप चाहे हेल्पलाईन नम्बर के रूप मे हो या आरोग्य सेतु एप के रूप मे हो, जनसरोकार स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र मे उपयोगी साबित हो रहा हैं।

कोरोना महामारी के दौर मे ई–प्रशासन ने आर्थिक एवं रोजगार के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। जहां लॉकडाउन एवं सामाजिक दूरी ने आर्थिक गतिविधियों को सीमित किया हैं। वहीं ई–प्रशासन ने ऑनलाईन माध्यम से आर्थिक गतिविधयों को संचालित किया हैं। इस दौर मे बडी बडी कम्पनीयों ने' वर्क फ्रेम टू होम की नीति को अपनाकर अपने कर्मचारियों से ऑनलाईन कार्य जारी रखा, फलस्वरूप जहां एक ओर आर्थिक क्रिया–कलाप संचालित होते रहे वहीं दूसरी ओर लोगों का रोजगार भी बचा रहा। अनेकों फैक्ट्री एवं कम्पनी मालिकों ने ऑनलाईन माध्यमों से अपने कर्मचारियों एवं श्रमिको से बातचीत करते हुये फैक्ट्रीयों एवं कारखानों में उत्पादन कार्य को जारी रखा तथा ऑनलाईन माध्यम से ही आमजन की मूल आवश्यक्ताओं की वस्तुओं, बिल, सेवाओं आदि को होम डिलेवरी के माध्यम से उपलब्ध कराया गया हैं। अनेकों कोचिंग सेन्टर, होम ट्यूटर आदि ने भी ऑनलाईन माध्यम से छात्रों को शिक्षा प्रदान की तथा अपने रोजगार को समाप्त होने से बचाय रखा। इस प्रकार ई–प्रशासन ने इस महासंकट के दौर मे न सिर्फ आर्थिक गतिविधियों को संचालित किया

बल्कि बडी मात्रा में बड़ी से बडी कम्पनीयों, फैक्ट्रीयों, कारखानों से लेकर छोटी से छोटी दुकानों में लगे कर्मचारियों के रोजगार को बचाया हैं।

कोविड–19 महामारी के दौर मे सबसे बड़ा संकट उन श्रमिकों और मजदूरों पर आया जो अपना घर, जनपद, राज्य को छोडकर दूर फैक्ट्रीयों, कारखानों एवं कम्पनीयों व छोटी–मोटी दुकानों पर मजदूरी करते हैं। अचानक लॉकडाउन होने से न तो ये अपने घर वापस आ पाए और नही, जहां मजदूरी करते थे वहां रोजमर्रा की आवश्यक्ताओं को पूरा कर पाए। किन्तु इस संकट के दौर मे उन परिवारों एवं श्रमिकों, मजदूरों को सहयोग करने में ई–प्रशासन की भूमिका को महत्वपूर्ण रूप से देखा जा सकता हैं द्य ई–प्रशासन ने ऑनलाईन माध्यम से सरकारी एवं गैरसरकारी स्तरों पर मजदूरों एवं श्रमिकों को आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराया हैं।

कोरोना वायरस के इस भयावह दौर मे ई–प्रशासन की सबसे बडी भूमिका यह देखी गई किस रकारी स्तर पर टी.वी, रेडियो एवं सोशल मीडीया के माध्यम से आम जनमानस को घर पर ही ऐसे मनोरंजन के कार्यक्रम दिखाए गये जैसे रामायण, महाभारत, आदि जिनसे न सिर्फ पूरा परिवार ने एक साथ बैठकर मनोरंजन किया बल्कि कई वर्षों से परिवार से दूर रह रहे सदस्यों के बीच पारिवारिक घनिष्टता को भी स्थापित किया गया जिससे पारिवारिक एकता में वृद्धि हुई हैं। साथ ही सरकार के इस प्रयास से आम लोगों पर कोरोना महामारी का मनोवैज्ञानिक दबाव भी कम हुआ हैं।

हलांकि कोरोना काल मे ई–प्रशासन आम जनता की सभी समस्याओं का पूर्ण रूप से समाधान निकालने में सफल नहीं रहा हैं, कई क्षेत्र ऐसे भी देखे गये हैं जहां ई–प्रशासन अभी पूर्णरूप से नही पहुच पाया हैं फिर भी कह सकते है कि अचानक आने वाली वैश्विक स्तर की इतनी बडी महामारी से निपटने के लियेसिर्फ ई–प्रशासन ही कॉफी नही है। फिर भी संकट के इस दौर मे ई–प्रशासन की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण एवं सराहनीय रही हैं। यदि ई–प्रशासन ने आगे आकर कार्य न किया होता तो निश्चित तौर पर आज आर्थिक स्थिति और भी निम्नतर स्तर पर होती तथा रोजगार, श्रम, शिक्षा, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में जो तत्परता दिखी है वो नहीं देखी जा सकती।

**निष्कर्ष**

21वीं सदी में जैव विविधता की हानि पारिस्थितिकी तंत्र में आए परिवर्तनों के प्रमुख कारणों में से एक हो सकती है। विकास का प्राथमिक उद्देश्य जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है। हालांकि अनियंत्रित विकास और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के प्रयासों के कारण कई चिंतनीय मुद्दे उठते हैं। लॉकडाउन के दौरान पर्यावरण की गुणवत्ता में आए सुधार यह दर्शाते हैं कि इनका पतन और शोषण मानव जनित है। यदि हम इन गतिविधियों पर लगाम लगा कर सीमित संसाधनों में जीवन यापन करने की आदत डाल लें, तो प्रकृति का संतुलन बनाए रखा जा सकती है। हमें अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को समझना और पहचानना चाहिए जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार के साथ सतत विकास भी होता रहे जो पर्यावरण के अनुकूल हो। वैसे तो समय–समय पर प्राकृतिक आपदाओं ने मनुष्य को पर्यावरण से खिलवाड़ ना करने के संकेत दिए हैं, पर लगातार बढ़ती जनसंख्या और मानवीय लालसाओं के कारण धरती का निरंतर शोषण होता रहा है। कोरोना महामारी और लॉकडाउन का निर्विवाद लाभ यह है कि इसने हमें एक बेहतर भविष्य की संभावना दिखाई है जिसे हम सभी को अपनाना चाहिए। मनुष्य ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपलब्धियों के झंडे गाड़ रखे हैं परंतु मानव समाज हमेशा से ही प्रकृति के साथ घनिष्ठ सामंजस्य भी चाहता रहा है। वर्तमान में कोविड–19 महामारी प्रकृति का दिया हुआ एक ऐसा संदेश एवं सबक है जो बहुत भारी कीमत पर

प्रदान किया गया है। मनुष्य को यह सबक जलवायु परिवर्तन के साथ–साथ एक बेहतर भविष्य के निर्माण में वैश्विक चुनौतियों को कम करने में काम आएगा। निष्कर्षत रूप से कह सकते कि कोविड–19 महामारी के दौर मे 'ई–प्रशासन' की भूमिका को प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण एवं प्रमुख रूप से देखा जा सकता हैं।

**संदर्भ**

1. Brad, P. (2019). Humans are speeding extincttion and altering the natural world at an 'unprecedented'pace. The New York Times.
2. Cortez, M. H., Duffy, M. A. (2021). The Context-Dependent Effects of Host Competence, Competition, and Pathogen Transmission Mode on Disease Prevalence. *The American Naturalist*. 198. 2. Pg. **179-194.**
3. Cucinotta, D., Vanelli, M. (2020). WHO Declares COVID-19 a Pandemic. *Acta Biomedica.* 19. 91(1). Pg. **157-160.**
4. News18.Watch: Hundreds of Baby Olive Ridley Turtles Make Their Way to sea in Odisha amid Lockdown. 09 May 2022.
5. Sharma, S., Zhang, M., Gao, A.J., Zhang, H., Kota, S.H. (2020). Effect of restricted emissions during COVID-19 on air quality in India. *Science of the Total Environment.* 728. 138878.
6. Srivastava, S., Kumar, A., Bauddh, K., Gautam, A.S., Kumar, S. (2020). 21-Day Lockdown in India Dramatically Reduced Air Pollution Indices in Lucknow and New Delhi.
7. WHO. (2022). World Health Organization (COVID-19) Homepage. 1.